SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अनुसंधान – चिंतन और उपयोगिता

मधुलता बारा, (Ph.D.), साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला,
देवानंद बोरकर, शोधार्थी (हिंदी), साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला
पं. रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

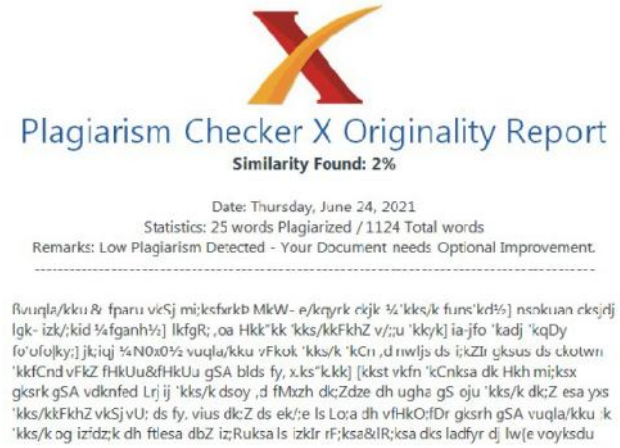

Corresponding Authors
मधुलता बारा, (Ph.D.),
साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला,
देवानंद बोरकर, शोधार्थी (हिंदी),
साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला
पं. रवि शंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 30/06/2021
Plagiarism : 02% on 24/06/2021

शोध सार

अनुसंधान अथवा शोध शब्द एक दूसरे के पर्याय होने के बाद भी उनका शाब्दिक अर्थ भिन्न–भिन्न है। इसके लिए गणेषणा, खोज आदि शब्दों का भी उपयोग होता है। अकादमिक स्तर पर शोध केवल एक डिग्री कार्यक्रम की नहीं है वरन् शोध कार्य में लगे शोधार्थी और अन्य के लिए अपने कार्य के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति होती है। अनुसंधान या शोध वह प्रक्रिया की जिसमें कई प्रयत्नों से प्राप्त तथ्यों–सत्यों को संकलित कर सूक्ष्म अवलोकन नीर–क्षीर विवेक दृष्टि से नयी अवधारणा या तथ्यों को स्थापित किया जाता है। अकादमिक शोध कई बार खोज कर तथ्यों–सत्यों को पुनः खोज कर नए विचार, निष्कर्ष और अवधारणाओं को स्थापित करने की प्रक्रिया भी मानी या कही जाती है।

मुख्य शब्द

शोध, विश्लेषण, उपयोगिता.

शाब्दिक व्युत्पति के आधार पर विश्लेषण कर तो अनुसंधान में अनु उपसर्ग है जिसका अर्थ है, पीछे जबकि संधान का अर्थ लक्ष्य साधन से लगाया जाता है। इस प्रकार संयुक्त अर्थ लक्ष्य का संधान करना या पीछा करना विज्ञप्त होता है। शोध शब्द का अर्थ शोधन प्रक्रिया लगाया जाता है, जिसमें किसी वस्तु या तथ्य का शोधन कर शुद्धता को प्राप्त किया जाता है। शोध बाह्य के साथ–साथ अभ्यांतरिक क्रिया का प्रतिफल या उत्पाद है। गवेषणा एक वैदिक शब्द है, प्राचीन वैदिक संस्कृति में गौ संपन्नता का सूचक था। गौ चरण के दौरान यदि गाय दिशा भटक जाए तो उन्हे खोजने की क्रिया गवेषणा कहलाती थी, वर्तमान समय में गवेषणा, गोष्ठी, प्रवीण, कुशल, आदि शब्दो का अर्थातरण हो गया है। ये शब्द आजकल गवेषणा अनुसंधान के अर्थ में, गोष्ठी–साहित्यिक

मंत्रणा के लिए, प्रर्वाण–दक्षता के लिए जिसका प्राचीन अर्थ वीणा बजाने से कोई संबंध नहीं है। कुशल का अर्थ ठीक होने से लगाया जाता है, जिसका प्रार्चान अर्थ यज्ञ या पूजा के लिए कुश लाने से आज नहीं लगाया जाता है। अनुसंध ाान के दूसरे अर्थ में लक्ष्य का पीछा करने के लिए स्वयं के मन, बुद्धि को स्थिर कर धारणा करना होता है।

अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य मानव–जीवन से संबंधित समस्याओं का समाधान करना भी है। समस्याओं पर अनुसंधान का परिणाम यह है कि मनुष्य का वतर्मान ज्ञान इससे विकसित होते रहता है। शोध मनुष्य के ज्ञान का विस्तार कर मनुष्य के जीवन को सरल एवं सुंदर बनता है। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करके आनंदपूर्वक जीवन की भूमिका का निर्वहन करने के लिए प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से यातनाओं एवं पीड़ाओं का निवारण करता है। लुण्डवर्ग ने अनुसंधान को परिभाषित करते हुये कहा हैः ''हमारी सांस्कृतिक उन्नति का रहस्य शोध में निहित है। शोध नये सत्यों के अन्वेषण द्वारा अज्ञान के क्षेत्रों को लुप्त कर देता है और वे सत्य हमें कार्य करने की उत्कृष्टतर विधियाँ और श्रेष्ठ परिणाम प्रदान करते है।"[1] यद्यपि सभी शोधकार्य में मनुष्य के लिए लाभकारी व हितदायक नहीं होते है, तो भी मनुष्य को उन्नत बनाने वाले सभी कार्यो को शोध नही मान सकते। आकस्मिक आविष्कारों के द्वारा और महान व्यक्तियों के अनुभवों से प्राप्त कारणों से जीवन प्रगतिशील हुई, किंतु इन्हे हम अनुसंधान नहीं कहतें है, क्योकि अनुसंधान बोधपूर्वक यत्न से योजनानुसार कार्य से तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से किये कार्य के परिणाम को अनुसंधान कहा जा सकता है।

एक व्यवस्थित क्रमिक अनुसंधान में प्रस्तुतीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, एक व्यवस्थित ढंग किया गया शोधकार्य प्रभावकारी व उपयोगी होता है। सामान्य पाठक केवल कृति को कृति के रुप जानता है न तो वह कृति के विषय में कुछ जानता है और न कृतिकार के विषय में ही, यद्यापि कृति में निहित कृतिकार के उद्देश्य को ग्रहण करना ही उसका लक्ष्य है। सुरेश कुमार ने कविता पर विशेष कार्य किया है उनका मानना है किः "हम बहिरंग को शैली वैज्ञानिक अध्ययन का प्रवर्तनन बिंदु बनाकर चले तो अधिक अच्छा होगा, क्योकि उसका अभिज्ञान अंतरंग की तुलना में सरल है। बहिरंग अंतरंग की तुलना मे सरल है, बहिरंग से अंतरंग की ओर जाना कठिन कार्य आवश्यक है।"[2] शोध कार्य के लिए सही चिन्तन और उसें लक्ष्यानुरुप क्रियात्मक आकार देने कि आवश्यकता है। कई बार चिन्तन सही रहता है किन्तु क्रियात्मकता के अभाव के कारण यथेष्ट सफलता नहीं मिलती या सफलता संदिग्द्ध होती है। इसके लिए चिन्तन की दशा और दिशा को प्रक्रियागत और सोपानबद्ध करने की महती आवश्यक्ता है जिससे शोध कार्य के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। एस.एन. गनेशन ने चिन्तन के छः भेद बताये है जो इस प्रकार हैः "(1) मननात्मक चिन्तन, (2) विश्लेशणात्मक चिंतन, (3) युक्ति–युक्त चिंतन, (4) तार्किक चिन्तन, (5) कल्पनात्मक चिन्तन, (6) सृजनात्मक चिन्तन, इसमें प्रथम चारो अनुसंधान मे सहायक है अन्तिम दोनो अनुसंधान मे कठिनाईयां उपस्थित कर सकते है या उसके परिणामो को अप्रमाणित बना सकते है।"[3] इसलिए शोध चिन्तन की दिशा और दशा में कल्पना प्रस्तुतो का और नव सृजनात्मकता का अनावश्यक प्रस्तुतीकरण साहित्यक दृष्टि से अच्छा माना जा सकता है किन्तु शोधकार्य के अनुकूल नहीं माना जा सकता। ऐसा करने से शोधकर्ता शोध के मूल लक्ष्यो से भटक सकता है, इसलिए यथा संभव कल्पना और नव सृजन का कम करना चाहिए, ताकि शोध के लक्ष्यो का प्राप्त किया जा सके।

अवधारणा एवं संकल्पना शोधकार्य की रुपरेखा निर्धारण करने पथप्रदर्शक की तरह कार्य करती हैं, फिर भी शोधार्थी को इन संदर्भो में पुर्वाग्रह से कार्य नहीं करना चाहिए। तटस्थता और संदर्भ विश्लेषण से पूर्वाग्रहों से बचा जा सकता है। एस. गणेशन ने इसे बौद्धिक ईमानदारी कहा है। "पूर्वाग्रहों से बचा जा सकता है, किसी वाद या सांप्रदायिक गुट से जुड़े होने के कारण भी और दोनो सच्चे अनुसंधान मे बाधक है।"[4] कें साथ न्याय नहीं कर सकते। संभावित परिणामों को पुष्ट करने के लिए तटस्था आवश्यक है।

शोध कार्य के सुचारु और गतिशील होने के लिए शोध अनुशासन भी आवश्यक और अनिवार्य तत्व है। इसके अलावा शिष्टतर भी आवश्यक है, जिससे शोधकर्ता अनावश्यक उलझनो में न फसें। इसके अलावा शोध कार्य के लिए विश्लेषण पद्धति भी तटस्थ होने चाहिए।

निष्कर्ष

अनुसंधान कार्य सबसे बड़ा प्रदेय हमारे जीवन को सरल–सुगम और मार्ग प्रशस्त करना है। आग और पहिए की खोज से लेकर मनुष्य की आज की अंतरिक्ष तकनीकी उपलब्धियों तक शोध कार्यो की महत्वपुर्ण भूमिका रही है। शोध कार्यो की सार्थक भूमिका के कारण मनुष्य आज विकास के नये आयामों छू रहा है। कहा जा सकता है कि अनुसंधान मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी एवं लाभादायक है, क्योकि अनुसंधान मानव जीवन के विकास व उन्नति मे सहायता प्रदान करती है, मनुष्य के विचारो को नए आयाम प्रदान करती है। शोध मनुष्य के जीवन में बहुत ही बदलाव व विकास लाया है। अन्ततः अनुसंधान मानव जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण व उपयोगी है।

संदर्भ सूची

1. जैन, बी.एम., (2016), *''शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक''*, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, पृ.क्रं.03।
2. कुमार, सुरेश, (2010), ''शैली विज्ञान'', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.क्र.163।
3. गणेशन, एन.एस., (2009), *''अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया''*, लोक भारतीय, इलाहाबाद, पृ.क्रं.24।
4. गणेशन, एन.एस., (2009), *''अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया''*, लोक भारतीय, इलाहाबाद, पृ.क्रं.33।
5. पाठक, विनय कुमार, (2005), *''अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया''*, भावना प्रकाशन, दिल्ली।
6. दास, श्याम सुन्दर, (2012), *''भाषा विज्ञान''*, विश्व भारतीय, नागपुर।
7. तिवारी, पारसनाथ, (1993), *''भाषा विज्ञान''*, :प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
8. तिवारी, भोलानाथ, (2016), *''हिंदी भाषा''*, किताब महल, पटना।
9. कपिल, एच.के., (2015), *''अनुसंधान विधियाँ''*, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा।

****